रायकोट की घटना

देश की स्वतन्त्रता के लिए शहीद

संत मंगल सिंह, संत मस्तान सिंह,
संत गुरमुख सिंह

05 अगस्त 1871, रायकोट (पंजाब)

जसविंदर सिंह, हिस्टोरीयन

पंजाब सरकार

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भारत की जंगे आज़ादी के मोडी, ना-मिलनसार
और स्वदेशी लहर के बानी
गाऊ-गरीब के पालक और धर्म रक्षक

श्री सतगुरू राम सिंह जी महाराज

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

रायकोट की घटना

देश की स्वतन्त्रता के लिए शहीद

संत मंगल सिंह, संत मस्तान सिंह, संत गुरमुख सिंह

05 अगस्त 1871, रायकोट (पंजाब)

जसविंदर सिंह, हिस्टोरीयन

पंजाब सरकार

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

रायकोट की घटना

देश की स्वतन्त्रता के लिए शहीद

संत मंगल सिंह, संत मस्तान सिंह, संत गुरमुख सिंह

05 अगस्त 1871, रायकोट (पंजाब)

जसविंदर सिंह, हिस्टोरीयन

जुलाई, 2009
कापियाँ : 5000

प्रकाशक : निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, पंजाब

मुद्रक : कंट्रोलर, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पंजाब द्वारा
पैराडाईज़ प्रिंट्रज (I), चण्डीगढ़।

पुस्तक मं प्रकट किये गए विचारों एवं तथ्यों के सम्बन्ध में लेखक ज़िम्मेवार है। पंजाब सरकार या सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, पंजाब का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं।

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

रायकोट की घटना

सतगुरू रामसिंह जी द्वारा 1857 ई0 को बैसाखी के दिन शुरू किया गया 'कूका आन्दोलन' कई प्रकार से अद्वितीय था। जब पंजाब पर अंग्रेजों ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तो सतगुरू जी ने विदेशी साम्राज्य से निजात पाने के लिए पंजाब की जनता को जागृत और संगठित करना शुरू कर दिया। 19वीं शताब्दी के दूसरे अर्द्ध में केवल नामधारी सिख ही थे जो संगठित रूप में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। सतगुरू जी ने लोगों को विदेशी साम्राज्य के विरूद्ध असहयोग आन्दोलन का आह्वान किया। स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग और विदेशी वस्तुओं, सुविधाओं, अदालतों, स्कूलों, रेलगाड़ियों, नौकरियों आदि के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया और अपनी डाक व्यवस्था चलाई जिसे इतिहास में 'कूका पोस्टल सर्विस' कहा जाता है।

स्वतन्त्रता संग्राम को और बल देने तथा संयुक्त प्रयत्न करने के लिए कश्मीर, नेपाल, काबुल और रूस के साथ सम्पर्क स्थापित किया। कश्मीर में तो एक कूका पलटन का भी गठन किया गया। नेपाल में रहने वाले 1857 के क्रान्तिकारियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया और पंजाब के लोगों को संघर्ष के लिए तैयार किया। अंग्रेज सरकार द्वारा प्राधीनता के एहसास जताने के लिए पंजाब में बड़े पैमाने पर गौवध शुरू कर दिया गया था। पवित्र नगरी को भी, जिसे गुरूजी का आर्शीवाद प्राप्त था, इस घिनौनी स्थिति का सामना करना पड़ा। यह सिखों के लिए एक चुनौती थी। सतगुरू राम सिंह जी के प्रचार के कारण लोगों में जागृति आ गई थी और वे गोवध से बहुत दुखी थे। जब पंजाब के हिन्दुओं और सिखों द्वारा किए गए शान्तिपूर्ण यत्न गौवध रोकने में विफल रहे तो जोश में आकर नामधारी सिखों ने अमृतसर, बागांवाली तथा रायकोट में गऊ हत्यारों के विरूद्ध कार्यवाही की और फांसी पर झूल गए। रायकोट की घटना भी इसी का एक भाग थी।

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

15 जुलाई, 1871 की रात को नामधारी सिखों ने रायकोट के बूचड़खाने पर हमला किया और गऊ हत्यारों का वध कर दिया । इस घटना ने चारों ओर हड़कंप मचा दिया क्योंकि 14 जून की रात को अमृतसर के बूचड़खाने पर हमला करने वाले अभी तक पकड़े नहीं जा सके थे । बाद में इस केस में शामिल गुरमुख सिंह, मंगल सिंह और मस्तान सिंह को पकड़ लिया गया । उन पर मुकदमा चलाया गया और 27 जुलाई, 1871 को उन्हें फांसी की सजा सुना दी गई । दो और व्यक्तियों ज्ञानी सूबा सिंह व रत्न सिंह नाईवाला को गिरफ्तार करके उन पर भी मुकदमा चलाया गया ।

05 अगस्त, 1871 को तीन नामधारी सिखों मंगल सिंह, मस्तान सिंह तथा गुरमुख सिंह को सैंकड़ों लोगों की उपस्थिति में सरेआम फांसी पर लटका दिया गया । अंग्रेजों की गौहत्या को प्रोत्साहन देने की नीति के विरूद्ध नामधारी सिखों द्वारा केवल रायकोट में ही कार्यवाही नहीं की गई बल्कि इससे पूर्व 14 - 15 जून की रात को उन्होनें अमृतसर में बूचड़ों के विरूद्ध कार्यवाही की थी जो अंग्रेजी साम्राज्य और उसकी नीतियों को खुली चुनौती थी ।

खालसा राज के समय पंजाब में गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध था । महाराजा रणजीत सिंह के काल में जब अंग्रेज सेना पंजाब से गुजरती थी तथा महाराजा की सेना में जो यूरोपियन अधिकारी कार्यरत थे सबके लिए गोहत्या करना और गौमांस का प्रयोग करना पूर्णतया वर्जित था । यहां तक कि 1847 में जब अंग्रेज पंजाब में शासित हो गए थे तो भी पंजाब के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का प्रयास नहीं किया गया था । अमृतसर में श्री दरबार साहिब के मुख्य द्वार पर अंग्रेज रैजिडैंट लॉरेंस ने जो पटिका लगवाई थी उसमें अंकित था कि "अमृतसर में गौवध नहीं किया जायेगा ।" परन्तु 1849 में जब अंग्रेजों ने पंजाब पर अपना आधिपत्य पूरी तरह स्थापित कर लिया तो उन्होंने पहले वाली

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਤੇ ਨਾਮਧਾਰੀ ਸੂਬੇ (ਪ੍ਰਚਾਰਕ)

ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਸੂਬਾ ਲਖਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਤੇ ਸੂਬਾ ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸਹਿਤ ਘੋੜਿਆਂ ਉਤੇ ਸਵਾਰ ਹਨ। ਸ੍ਰ. ਹੀਰਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਤੇ ਸ੍ਰ. ਲਹਿਣਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦਾ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦਾ ਜੱਥਾ ਪੈਦਲ ਯਾਤਰਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਪਿੰਡਾਂ, ਨਗਰਾਂ ਅਤੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਵਿਚ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਸਰਕਾਰ ਵਿਰੁਧ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੌਰੇ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਦੇ ਹੋਏ।

SRI SATGURU RAM SINGH JI AND SUBAS (PREACHERS)

Sri Satguru Ram Singh Ji along with Suba Lakha Singh & Suba Sahib Singh (On Horse) Group of S. Hira Singh & Lehna Singh (on foot).
Sri Satguru Ram Singh Ji established Suba System to propagate among the people to unite & fight the Foreign Rulers in India.

Namdhari Elibrary
NamdhariElibrary@gmail.com

नीति बदल दी जिसमें व्यवस्था थी कि किसी भी व्यक्ति को अपने पड़ौसी के धार्मिक मामलों में हस्ताक्षेप करने की आज्ञा नहीं होगी ।

पंजाब पर आधिपत्य स्थापित करते ही अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो की नीति पर अमल करना शुरू कर दिया था । पंजाब में मुस्लमानों की भारी संख्या थी और गौवध के लिए उन्हें छूट देकर अंग्रेज अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए उनका लाभ लेना चाहते थे । अंग्रेज गौमांस खाते थे और मुस्लमान भी इसलिए धार्मिक विचारधारा की छूट देने के साथ मुस्लमान वर्ग से अंग्रेजों को समर्थन मिल सकता था और वे चाहते भी यही थे कि गौवध के मामले को लेकर हिन्दू, सिखों और मुस्लमानों का आपसी भाईचारा टूटे और उनमें दूरी बढ़े । यह बात उनके साम्राज्य के हित में थी । 08 अप्रैल, 1869 को भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा के एक नोट में पंजाब के उपराज्यपाल ने लिखा था "चर्बी वाले कारतूसों की तरह किसी भी प्रश्न पर अथवा गौवध के विरूद्ध आवाज के कारण बवाल खड़ा हो सकता है और महीने भर ही में पूरा राज्य आग की लपटों में घिर सकता है ।" थोड़ा आगे चलकर उपराज्यपाल ने पैरा 17 में लिखा (लोक समझते हैं) "अंग्रेज स्वयं गौमांस खाते हैं और मुस्लमानों को भी गौवध के लिए प्रोत्साहन देते हैं ताकि हिन्दुओं और मुस्लमानों में दूरी बढ़े और गौवध के प्रश्न को तो पिछले 20 वर्षों से बहुत ही खतरनाक माना जा रहा है और यदि यही भावना (अंग्रेजों द्वारा गौहत्या करने की भावना) हमारी स्थानीय सैनिकों तथा पुलिस में भी फैल गई तो यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कुछ समय के अन्दर ही भारत के बड़े भाग से बरतानवी शासन उखाड़ दिया जायेगा ।"

गौवध के बारे में मुस्लमानों के प्रति नीति के सम्बंध में पंजाब के माल कमीश्नर जी.एस. औगलीवन ने लिखा कि जहां तक नेताओं का प्रश्न है गौवध विरोधी आन्दोलन धार्मिक जोश की आड़ में राजद्रोह

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

है । महारानी विकटोरिया ने भी दिसम्बर 1893 में वायसरॉय लॉर्ड लैनिसडॉन को एक पत्र में लिखा कि हिन्दुओं के मुकाबले मुस्लमानों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है और वे निश्चय ही अधिक वफादार हैं । बेशक मुस्लमानों द्वारा गौवध करने के विरोधी आन्दोलन को एक बहाना ही बनाया गया है फ़िर भी यह आन्दोलन वास्तव में हमारे विरूद्ध है ।

एक फारसी सामाचारपत्र ने 1884 के अपने अंक में लिखा था कि यदि मुस्लमान गौवध करते हैं तो यह अंग्रेज़ अधिकारियों के आदेश पर ही किया जाता है । ये अधिकारी हिन्दुओं और मुस्लमानों के बीच दूरी बनाये रखना चाहते हैं ।

उपरोक्त सभी प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब पर काबिज होने के बाद अंग्रेजों ने जान-बूझकर गौहत्या की छूट दी थी ताकि पहली बात यह कि हिन्दुओं, सिखों और मुस्लमानों के बीच झगड़े हों और दूरी बढ़े, यह बात अंग्रेजों की फूट डालो-राज करो की नीति का हिस्सा थी । दूसरी बात मुस्लमानों को अपने पक्ष में करके अपना साम्राज्य मजबूत करना था । इन सब बातों का उद्देश्य राजनीतिक ही था इसलिए पंजाब में नामधारी सिखों द्वारा अमृतसर, रायकोट आदि क्षेत्रों में गौवध के विरूद्ध की गई कार्यवाहियां धार्मिक विचारधारा की ओट में राजनीति से ही प्रेरित थी । सतगुरू रामसिंह जी के इस उद्देश्य से किए गए प्रचार के बारे में 12 फरवरी, 1872 को पंजाब के एक महाराजा ने पंजाब सरकार को लिखा था कि यह बात निश्चित है गुरू रामसिंह का असल उद्देश्य धार्मिक लहर के बहाने सत्ता प्राप्त करना है ।

04 नवम्बर, 1871 को अम्बाला के कमीश्नर ने सरकार को एक लम्बी चिट्ठी लिखी जिसमें एक जगह पर उन्होंने सारी घटनाओं का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि मैं सोचता हूं कि उपरोक्त सभी

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

बातों का निचोड़ यह है कि कूका लहर (शुरू-शुरू में निःसंदेय यह कैसी भी थी) अब यह पूरी तरह राजनीतिक बन गई है, धार्मिक नहीं रही।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह समझा जा सकता है कि नामधारी सिखों द्वारा गौवध के विरूद्ध की गई कार्यवाहियां वास्तव में अंग्रेजी साम्राज्य की नीतियों के विरूद्ध ही थीं और उनका उद्देश्य राजनीति था, धार्मिक नहीं। 20वीं सदी के तीसरे दशक में महात्मा गांधी ने नमक का कानून तोड़ने के लिए डांडी मार्च किया था। नमक तो रसोई में प्रयोग की एक वस्तु है फिर भी नमक आन्दोलन का डांडी मार्च अंग्रेजों के विरूद्ध राजनैतिक संघर्ष का प्रतीक माना गया। ठीक इसी तरह नामधारी सिखों द्वारा अमृतसर और रायकोट में बूचड़ों के विरूद्ध की गई कार्यवाही उनके गलत कानून को तोड़न के लिए थी जो फूट डालो और राज करो की नीति पर आधारित थी। इसलिए अमृतसर और रायकोट में बूचड़ों के विरूद्ध की गई कार्यवाहियां पूर्णतया राजनीतिक उद्देश्य से थीं और इन्हें इसी संदर्भ में देखने की आवश्यकता है।

रायकोट में शहीद किए गए नामधारी सिखों गुरमुख सिंह, मंगल सिंह और मस्तान सिंह ने देश की आजादी के लिए आत्म बलिदान किया। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी की भारत के लोग उनके अद्वितीय बलिदान को सदैव याद रखें और इतिहासकार उन्हें इतिहास में योग्य स्थान दें जो यह गाते हुए फांसी पर झूल गए:

असां हिन्द विच गदर मचाउना कढना फिरंगियां नूं।

उनके बलिदान से देशवासियों में ऐसी भावना पैदा हुई कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और भारत स्वतन्त्र हुआ।

Printed at : Paradise Printers (I), Chandigarh

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

शहीदी साका रायकोट
तीन सिंह शहीद हुये 5 अगस्त 1871

Namdhari Elibrary
NamdhariElibrary@gmail.com

Information

&

Public

Relations

Punjab

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com